प्रसाद के कथा साहित्य में ''ऐन्द्रिय–आनन्द''

अरविन्द कुमार सिंह

प्रसाद के कथा साहित्य में प्रायः सभी पात्र प्रेम के आरम्भिक चरण में ऐन्द्रिय वासना की तृप्ति का प्रयास और तज्जन्य आनन्द की अनुभूति करते दिखायी देते हैं। वे सुन्दर रूप के दर्शन के आनन्द में सदैव मग्न रहना चाहते है। कुछ ऐसे पात्रों की भी सृष्टि उनके कथा साहित्य में हुई है जो रूपान्धता के कारण अधोगति का प्राप्त होते हैं। कई रूपान्ध प्रेमी पतंगे रूपगर्विताओं की रूपसज्जा में पड़कर भस्म होते हुए वहाँ दिखाये गये हैं किन्तु इस अर्पण में भी उन्हें एक प्रकार का ऐन्द्रिय सुख अन्त तक मिलता रहता है। ऐन्द्रिय आनन्द का लोभ उन्हें इस स्थिति तक पहुँचने को विवश करता रहा। ऐन्द्रिय आनन्द वहीं तक श्रेयस्कर और वरेण्य होता है, जहाँ तक वह आत्मिक आनन्द की विकास–यात्रा के लिए प्रगति–सोपान का काम करता है।

प्रसाद के कथा–साहित्य में ऐन्द्रिय आनन्द के अनेक स्तर देखने को मिलते है। लेखक ने अपने आनन्द विषयक धारणाओं को अपने कथा–साहित्य के पात्रों के माध्यम से कहीं–कहीं तो प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त और उनके स्थलों पर परोक्ष रूप से व्यंजित किया है। लेखक की दृष्टि से व्यक्ति मुख्यतः निमग्न ऐन्द्रिय आनन्द–सोपानों को पार करता हुआ आत्मिक आनन्द के उच्च शिखर तक की यात्रा पूरी करता है।